राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल (म. प्र.) द्वारा अनुमोदित,

मध्य प्रदेश

डी. एल. एड. (द्विवर्षीय पाठ्यक्रम)

2019 से प्रभावी

SYLLABUS

प्रारम्भिक शिक्षा में पत्रोपाधि (D.El. Ed.)
प्रथम वर्ष

सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम

क्र.	पाठ्यक्रम शीर्षक	प्रश्न पत्र	प्रस्तावित कालखण्ड	बाह्य मूल्यांकन	आंतरिक मूल्यांकन	पूर्णांक
1.	बाल्यावस्था एवं बाल विकास Childhood and Development of Children	1	120	70	30	100
2.	समसामयिक भारतीय समाज में शिक्षा Education in contemporary Indian Society	2	120	70	30	100
3.	पूर्व बाल्यावस्था—परिचर्या एवं शिक्षा Early Childhood Care and Education (Pre-Primary and Primary Education)	3	120	70	30	100
4.	भाषा बोध एवं प्रारम्भिक भाषा विकास Understanding Language and Early Language Development	4	60	25	25	50
5.	पाठ्यचर्या में सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी का एकीकरण Padagogy and it integration across the Curriculum	5	120	50	50	100
6.	Proficiency in English	6	60	25	25	50
7.	योग शिक्षा Yoga Education (First Year)	7	60	25	25	50
8.	मातृभाषा/क्षेत्रीय भाषा शिक्षण Pedagogy of Mother Tongue/ Regional Language Teaching (क) हिन्दी भाषा शिक्षण Hindi Language Teaching (ख) संस्कृत Sanskrit Teaching (ग) मराठी Marathi Teaching (घ) उर्दू Urdu Teaching	8	120	70	30	100
9.	Pedagogy of English	9	120	70	30	100
10.	गणित शिक्षण (प्राथमिक तथा पूर्व प्राथमिक के लिये) Pedagogy of Mathematics Education (for Early Primary and Primary School)	10	120	70	30	100
	योग			545	305	850

डी. एल. एड. (प्रथम वर्ष)

बाल्यावस्था एवं बाल विकास
(Childhood and Development of Children)
(प्रश्न पत्र-I)

पूर्णांक अंक—100
बाह्य मूल्यांकन—70
आंतरिक मूल्यांकन—30

इकाईवार अंकों का विभाजन

क्रम सं.	इकाई का नाम	अंक
1.	विकास सम्बन्धी दृष्टिकोण	15
2.	शारीरिक—गत्यात्मक विकास	13
3.	भाषा सामाजिक एवं भावनात्मक विकास	15
4.	समाजीकरण का संदर्भ	15
5.	बचपन	12
	आंतरिक अंक	30
	कुल योग	100

इकाई 1. विकास सम्बन्धी दृष्टिकोण (Perspective in Development)

- बाल विकास का परिचय—वृद्धि, विकास एवं परिपक्वता की अवधारणा, विकास के सम्बन्ध में विविध दृष्टिकोण की अवधारणा एवं परिचय; मानविकी मनोविज्ञान एवं विकासात्मक सिद्धान्त।
- बाल विकास के अध्ययन की स्थायी विषयवस्तु—बहुआयामी एवं बहुलता रूप में विकास, जीवनकाल में सतत् रूप से विकास, विकास पर सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का प्रभाव।
- बाल विकास के अध्ययन के लिए विभिन्न प्रविधियाँ—प्रकृतिवादी अवलोकन, साक्षात्कार, विशिष्ट झलकियाँ एवं वर्णात्मक कथाएँ, पियाजे का बाल विकास का सिद्धान्त।
- बच्चों की समावेशी शिक्षा—अवधारणा और प्रविधियाँ।

इकाई 2. शारीरिक—गत्यात्मक विकास (Physical-Motor Development)

- शारीरिक—गत्यात्मक विकास, वृद्धि एवं परिपक्वता।
- शारीरिक—गत्यात्मक विकास के लिए अवसर उपलब्ध कराने में अभिभावक एवं शिक्षकों की भूमिका, जैसे खेल आदि।

इकाई 3. भाषा सामाजिक एवं भावनात्मक विकास (Language, Social and Emotional Development)

बोलना एवं भाषा विकास–

- पूर्व-भाषायी संप्रेषण।
- भाषा विकास की अवस्थाएँ।
- भाषा विकास के स्रोत–घर, शाला एवं मीडिया।
- भाषा के उपयोग–संवाद एवं वार्तालाप में बच्चों की बातचीत को सुनना।
- संवाद में सामाजिक सांस्कृतिक भिन्नताएँ–उच्चारण।
- संप्रेषण के विभिन्न तरीके और कहानी कहना।

सामाजिक विकास–

- सामाजिक विकास में परिवार, सहपाठियों एवं स्कूल की भूमिका।
- सामाजिक विकास में स्पर्धा, अनुशासन, पुरस्कार एवं दण्ड की भूमिका।
- संवेगों की आधारभूत समझ–गुस्सा, डर, चिंता, खुशी आदि।
- संवेगों की विकास, संवेगों के कार्य, बाल्वी का लगाव सिद्धांत।

इकाई 4. समाजीकरण का संदर्भ (Context of Socialization)

- समाजीकरण की अवधारणा एवं प्रक्रियाएँ।
- समाजीकरण में सामाजिक एवं सांस्कृतिक भिन्नताएँ।
- परवरिश, परिवार एवं वयस्क एवं बच्चों के बीच सम्बन्ध, पालन पोषण के तरीके, बच्चों का अभिभावकों से अलग रहना, झूलाघरों में रहने वाले बच्चे, अनाथालय।
- स्कूलिंग–शिक्षक बालक का साथ सम्बन्ध एवं शिक्षक की भूमिका।
- सहपाठियों के साथ सम्बन्ध–साथी मित्रों के साथ सम्बन्ध, स्पर्धा, एवं सहयोग, बचपन के दौरान उग्रता एवं शरारत।
- सामाजिक सिद्धान्त एवं लैंगिक (जेंडर) विकास–लिंग आधारित भूमिकाओं का आशय, लिंग आधारित भूमिकाओं पर प्रभाव, रूढ़ वादिता, खेल के मैदान में लिंग (पहचान) का प्रभाव।
- शाला त्यागी की समस्या।

इकाई 5. बचपन (Childhood)

- बालश्रम, बाल शोषण, गरीबी, वैश्वीकरण विद्यालय से गैरहाजिरी की समस्या एवं वयस्क संस्कृति के संदर्भ में बचपन।
- बचपन की धारणा में समानताएँ एवं विविधताएँ और खासतौर से भारतीय संदर्भ में किस तरह बचपन पनपते हैं।

सन्दर्भित पुस्तकें

बाल्यावस्था एवं बाल विकास –डॉ. विनोद सिंह भदौरिया/ डॉ. विमल कुमार पाण्डेय

समसामयिक भारतीय समाज में शिक्षा
Education in contemporary Indian Society
(प्रश्न पत्र-2)

पूर्णांक—100
बाह्य अंक—70
आंतरिक अंक—30

इकाईवार अंकों का विभाजन

क्रमांक	इकाई	विषय	अंक
1.	1	राज्य, राजनीति एवं भारतीय शिक्षा	15
2.	2	समाज व शालेय शिक्षा का परिप्रेक्ष्य	15
3.	3	भारतीय संविधान एवं शिक्षा	15
4.	4	शिक्षा में समकालीन मुद्दे एवं सरोकार	15
5.	5	सामाजिक बदलावकर्ता के रूप में शिक्षक	10
		आंतरिक अंक	30
		कुल अंक	100

इकाई 1. राज्य, राजनीति एवं भारतीय शिक्षा (State, Politics and Indian Education)

- ❖ राज्य एवं शिक्षा
- ❖ शिक्षा की राजनैतिक प्रकृति
- ❖ नव आर्थिक सुधार एवं शिक्षा पर उनका प्रभाव
- ❖ सार्वजनिक शिक्षा बनाम निजी शिक्षा
- ❖ सार्वजनिक शिक्षा का निजीकरण
- ❖ हाशियाकृत (marginalised) एवं सामाजिक रूप से वंचितों की शिक्षा
- ❖ भारत में शिक्षा के अवसरों की समानता लाना।

इकाई 2. समाज व शालेय शिक्षा का परिप्रेक्ष्य (Perspectives on Society and Schooling)

- ❖ भारत में वर्ग, जाति, धर्म, परिवार एवं राजनीति के विशेष संदर्भ में सामाजिक संरचना एवं शिक्षा
- ❖ संस्कृति एवं शिक्षा
- ❖ आधुनिकीकरण, सामाजिक बदलाव एवं शिक्षा।

इकाई 3. भारतीय संविधान एवं शिक्षा (Constitution of Indian and Education)

- ❖ स्वतन्त्र भारत की संवैधानिक दृष्टि—तब और अब
- ❖ संविधान एवं शिक्षा—शिक्षा की समवर्ती स्थितियाँ, शिक्षा के संवैधानिक प्रावधान

2.	विकास की दृष्टि से समुचित प्रारम्भिक बचपन में देखभाल और शिक्षा (ECCE) पाठ्यक्रम के सिद्धांत और विधियाँ	20
3.	बचपन में देखभाल एवं शिक्षा की पाठ्यचर्या की योजना एवं प्रबंधन	15
4.	बच्चों के प्रगति का आंकलन	15
	आंतरिक अंक	30
	कुल अंक	100

इकाई 1. प्रारम्भिक बचपन में देखभाल एवं शिक्षा की परिभाषा प्रकृति एवं महत्व (Definition, Nature and Significance of Early Childhood and Education)

- प्रारम्भिक बचपन में देखभाल एवं शिक्षा की समग्र पाठ्यचर्या की परिभाषा एवं उद्देश्य।
- जीवन पर्यन्त सीखने एवं विकास में प्रारम्भिक बचपन में देखभाल एवं शिक्षा (ECCE) को महत्वपूर्ण अवधि के रूप में महत्व जानना।
- अधिगम को सुगम बनाने के लिए प्रारम्भिक बचपन में देखभाल एवं शिक्षा की अवधि को आठ साल की उम्र तक बढ़ाने सम्बन्धी तर्क।
- विद्यालयों में प्रारम्भिक अधिगम की चुनौतियाँ एवं शाला पूर्व तैयारी की अवधारणा।

इकाई 2. विकास की दृष्टि से समुचित प्रारम्भिक बचपन में देखभाल और शिक्षा (ECCE) पाठ्यक्रम के सिद्धान्त और विधियाँ (Principles and Methods of Developmentaly Appropriate ECCE Curriculum)

- बच्चे कैसे सीखते हैं—प्रारम्भिक, मध्य एवं बाद के बचपन तक अवस्थावार विशिष्टताएँ।
- प्रारम्भिक वर्षों में सीखने के लिए खेल एवं गतिविधि आधारित शिक्षा का महत्व।
- बच्चों के समग्र विकास के क्षेत्र एवं गतिविधियाँ।
- प्रारम्भिक वर्षों में साक्षारता एवं अंक ज्ञान।

इकाई 3. बचपन में देखभाल एवं शिक्षा के पाठ्यचर्या की योजना एवं प्रबन्धन (Planning and Management of ECCE Curriculum)

- सुगठित एवं संदर्भयुक्त पाठ्यचर्या की योजना के सिद्धांत
- दीर्घ एवं अल्पकालिक उद्देश्य एवं योजना
- परियोजना विधि एवं विशिष्ट कार्यक्षेत्र केन्द्रित उपागम (Approach)
- विकास की दृष्टि से उपयुक्त एवं समावेशी कक्षा प्रबंधन

इकाई 4. बच्चों के प्रगति का आकलन (Assessing Children's Progress)

- प्रारम्भिक बचपन में सीखने एवं विकास के मापदण्ड

- ❖ बच्चों की प्रगति का अवलोकन एवं उसका अभिलेखीकरण
- ❖ बच्चों की प्रगति का प्रतिवेदन
- ❖ घर और शाला के बीच जुड़ाव सुनिश्चित करना।

सन्दर्भित पुस्तकें

पूर्व बाल्यावस्था परिचय एवं शिक्षा —डॉ. सुरेन्द्र कुमार तिवारी/ डॉ. योजना श्रीवास्तव

भाषा बोध एवं प्रारम्भिक भाषा विकास
Understanding Language and Early Language Development
(प्रश्न पत्र-4)

पूर्णांक—50
बाह्य अंक—25
आंतरिक अंक—25

इकाईवार अंकों का विभाजन

क्रमांक	इकाई	विषय	अंक
1	1	भाषा क्या है (What is Language)	2
2	2	भाषाई विविधता और बहुभाषिकता (Listening and Speaking)	2
3.	3	भाषा अधिग्रहण और भाषा सीखना (Language Accquistion and Learning)	2
4.	4	भाषा की कक्षा (Language Classroom)	2
5.	5	भाषा कौशल क्या है? (Developing Language Skills)	4
6.	6	भाषाई कौशल का विकास (Developing Language Skills)	4
7.	7	साहित्य (Literature)	3
8.	8	पाठ्यपुस्तक एवं उसके शिक्षाशास्त्र की समझ (Understanding text book and Pedogogy)	3
9.	9	कक्षा शिक्षण की योजना एवं आकलन (Classroom Planning and Evaluation)	3
		आन्तरिक अंक	25
		कुल अंक	50

इकाई 1. भाषा क्या है? (What is language ?)

- परिचय
- भाषा, विचार और समाज
- पशु एवं मानव संप्रेषण के बीच अंतर
- भाषा की विशेषताएँ. भाषा के कार्य
- भाषा की संरचना
- भाषा और उसमें निहित शक्ति।

इकाई 2. भाषाई विविधता और बहुभाषिकता (Listening and Speaking)

- भाषा के बारे में संवैधानिक प्रावधान
- बहुभाषिकता की प्रकृति और कक्षा में इसका प्रभाव
- भाषाई विविधता—भारत एवं मध्यप्रदेश के सम्बन्ध में
- बहुभाषिकता—कक्षा संसाधन और रणनीति के रूप में।

इकाई 3. भाषा अधिग्रहण और भाषा सीखना (Language Accquistion and Learning)

- परिचय
- भाषा और बच्चे
- अधिग्रहण और सीखना
- प्रथम भाषा अधिग्रहण
- द्वितीय भाषा और विदेशी भाषाओं को सीखना।

इकाई 4. भाषा की कक्षा (Language Classroom)

- परिचय
- भाषा शिक्षण के उद्देश्य (aims and objectives)
- भाषा शिक्षण के वर्तमान तरीके और उनका विश्लेषण
- शिक्षक की भूमिका
- त्रुटियों की भूमिका।

इकाई 5. भाषाई कौशल क्या है (Developing language skills) (1)

- परिचय
- सुनना—सुनने से तात्पर्य
- बोलना—बोलने से तात्पर्य
- सुनने और बोलने के कौशल का विकास—संवाद, लघु नाटक, कहानी सुनना, कविता सुनना।

इकाई 6. भाषाई कौशलों का विकास (Developing language skills) (2)

- परिचय।
- साक्षरता और पढ़ना-पढ़ने से तात्पर्य।
- वर्णनात्मक पाठ्यवस्तु को पढ़ना—पाठ्यवस्तु को समझना, आलेख का विस्तार करना, पठित सामग्री को अपने अनुभव से जोड़ना, नए अनुभवों को आलेख में शामिल करना, पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त भी विविध सामग्री को पढ़ पाना।
- पढ़ने की रणनीतियाँ—पढ़ने से पहले, पढ़ने के दौरान और पढ़ने के बाद की रणनीतियाँ।
- भाषा के विविध साधनों की समझ, बच्चों को अच्छा पाठक बनाना।
- लेखन एक कौशल!
- पढ़ने और लिखने के बीच का सम्बन्ध।
- लेखक कौशल का विकास करना, मौलिक लेखन कर पाना।
- साहित्य की विभिन्न विधाओं से सम्बन्धित साहित्यिक उदाहरण दिए जाएँ जिससे कि पढ़ाना आसान हो।

इकाई 7. साहित्य (Literature)

- पाठ्यपुस्तक के प्रकार—कथात्मक एवं वर्णात्मक साहित्य से परिचय, उन्हें पढ़कर समझना, पाठ्यवस्तु के साथ सम्बन्ध स्थापित करना।
- साहित्य की विभिन्न विधाओं के शिक्षण के उद्देश्य।
- साहित्य की विभिन्न विधाओं को पढ़कर समझना।
- सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में साहित्य का प्रयोग कर पाना।
- गद्य एवं पद्य को पढ़ाने की विधियाँ—व्याकरण-रचनात्मक तरीके।

इकाई 8. पाठ्यपुस्तक एवं उसके शिक्षण शास्त्र की समझ (Understanding text book and pedogogy)

- भाषा की पाठ्यपुस्तकों के निर्माण के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत।
- विषय-वस्तु एवं उसके शिक्षण के तरीके।
- पाठ्यपुस्तक में दी गई विषयवस्तु, उसके शिक्षण के तरीके, इकाइयों की रूपरेखा, अभ्यास कार्य की प्रकृति और उसकी बारीकियों का विश्लेषण।
- अकादमिक मापदंड और सीखने के तरीके।
- भाषा की कक्षा में शिक्षण सहायक सामग्री।

इकाई 9. कक्षा शिक्षण की योजना एवं आकलन (Classroom planning and evaluation)

- कक्षा शिक्षण की तैयारी—भाषा की कक्षाओं की वार्षिक एवं कालखण्डवार कार्ययोजना बनाना।

- आकलन सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में अन्तर (CCE)
- भाषा की कक्षा में रचनात्मक आकलन (पढ़ने-लिखने का आकलन)
- भाषा की कक्षा में योगात्मक आकलन (कौशल आधारित)।

सन्दर्भित पुस्तकें

भाषा बोध एवं प्रारम्भिक भाषा विकास —डॉ. लता अग्रवाल

पाठ्यचर्या में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी का एकीकरण
ICT integration across the Curriculum
(प्रश्न पत्र-5)

पूर्णांक—100
बाह्य अंक—50
आंतरिक अंक—50

इकाईवार अंकों का विभाजन

क्रमांक	इकाई की संख्या	विषय का शीर्षक	अंक अधिभार
1.	1	स्कूल शिक्षा में सूचना सम्प्रेषण तकनीक आधार	15
2.	2	सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी आधारित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया	15
3.	3	सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी आधारित आंकलन/मूल्यांकन	10
4.	4	विषय आधारित वेब साइट एवं सॉफ्टवेयर एवं उपयोग	10
		आंतरिक अंक	**50**
		कुल अंक	**100**

इकाई 1. स्कूल शिक्षा में सूचना सम्प्रेषण तकनीकी आधार

शिक्षा में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीक—परिभाषा, अर्थ एवं भूमिका

- शिक्षा में कम्प्यूटर

हार्डवेयर—डाटा स्टोरेज, डाटा बैकअप

सॉफ्टवेयर—सिस्टम सॉफ्टवेयर (विंडोस, लिनेक्स, एड्रोइड), एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर (वर्ड, पावरपॉइंट, एम. एस. एक्सेल)

- इंटरनेट और इंट्रानेट—खोज करना, चयन करना डाउनलोड करना, अपलोड करना

- ❖ दस्तावेज निर्माण और प्रस्तुतीकरण—टेक्स्ट दस्तावेज निर्माण, स्प्रेडशीट निर्माण, पावरपॉइंट निर्माण एवं प्रस्तुतीकरण (स्लाइड, चार्ट, कार्टून, चित्र के साथ)
- ❖ मुक्त शैक्षिक संसाधन (ओईआर)—अर्थ, उद्देश्य एवं महत्त्व नेशनल रिपोजीटरी ऑफ ओईआर

  ओईआर फॉर स्कूल्स—एच. बी. सी. एस. ई., टी. आई. एफ. आर, एम. के. सी. एल. एवं आई-कोन्सेंट का संयुक्त प्रयास अन्य; जैसे—स्कूल फार्ज, ओपेन सोर्स एडुकेशन फाउंडेशन, नेशनल सेंटर फॉर ओपेन सोर्स एंड एडुकेशन तथा फ्लॉसएड, ऑर्ग।

इकाई 2. सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी आधारित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया

- ❖ मस्तिष्क आधारित अधिगम (बी. बी. एल.)
- ❖ ई-लर्निंग एवं ब्लैंडेड लर्निंग
- ❖ एल. 3 समूल रचना, कापरेटिव एवं कोलोब्रेटीव अधिगम
- ❖ फ्लिप्ड एवं स्मार्ट क्लासरूम, इंटरैक्टिव व्हाइट बोर्ड
- ❖ सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी समर्थित अधिगम के वैकल्पिक तरीके—पैकेंज (काई/सी. ए. एल. पैकेज, मल्टीमीडिया पैकेज, ई-कंटैंट, एम. ओ. ओ. सी.), सोशल मीडिया (मोबाइल, ब्लॉग, विकि, व्हाट्सएप, चैट आदि)
- ❖ आभासी प्रयोगशाला (वर्चुअल लैब)—अर्थ एवं भूमिका
- ❖ सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी आधारित अधिगम संसाधन निर्माण (एडुकाप्ले आदि द्वारा)

इकाई-3 सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी आधारित आंकलन/मूल्यांकन

- ❖ सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी समर्थित आंकलन/मूल्यांकन के वैकल्पिक तरीके—ई-पोर्टफोलियो, कम्प्यूटर आधारित प्रश्न बैंक आदि)
- ❖ आकलन रूब्रिक के निर्माण के लिए ऑनलाइन रुब्रिक जेनेरेटर; जैसे—आर. यू. बी. आई. एस. टी. ए. आर., आई. आर. यू. बी. आर. आई. सी.
- ❖ सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी आधारित आंकलन/मूल्यांकन टूल (एस. ओ. सी. आर. ए. टी. आई. वी. ई., पी. आई. एन. जी. पी. ओ. एन. जी., सी. एल. ए. एस. एस., बी. ए. डी. जी. ई. एस., सी. एल. ए. एस. एस. एम. के. ई. आर. आदि)
- ❖ सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी आधारित परीक्षण निर्माण टूल्स (एच. ओ. टी. पी. ओ. टी. ए. टी. ओ., एस. यू. आर. वी. ई. एम. ओ. एन. के. ई. वाई., जी. ओ. ओ. जी. एल. ई., एफ. ओ. आर. आर. एम आदि)

इकाई 4. विषय आधारित वेब साइट एवं सॉफ्टवेयर एवं उपयोग

- ❖ भौतिक विज्ञान आधारित—फीजिओन. ब्राइट स्टोर्म, कॉम, नासा वर्ल्ड वाइड

- रसायन विज्ञान आधारित—पिरियोडिक टेबिल क्लासिक, कलजिअम
- मेथ्स आधारित—जियो जेबा, नेथ्सइसफन, सेज मेथ्स, खानएकदेमी, ओ. आर. जी, टूक्स मेथ्स
- समाज विज्ञान आधारित—सेलास्टिया, जी. कॉपरिस; व्ल्र्ड वाइड टेलेस्कोप, जी. कोम्प्रिस
- भाषा आधारित—ब्राइट स्टोर्म, कॉम,
- अन्य (नॉलेज एडवेंचर, माइंड जीनियेस, डिज्नी इंटरैक्टिव, द लर्निंग कम्पनी, थिंकिगब्लोक्कस)
- कार्यशालाओं के माध्यम से
- करके सीखने के अवसर देना।

सन्दर्भित पुस्तकें

पाठ्यचर्या में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी का एकीकरण	—डॉ. भोजराज वरौदे/ डॉ. मधु कृषनानी

Proficiency in English
(D.El.Ed. First Year)
Question Paper-6

Maximum Marks : 50
External : 25
Internal : 25

Unit-wise division of marks

Unit S. No.	Unit Name	Marks
1.	Status of English in India	2
2.	Listening and Speaking	4
3.	Reading	6
4.	Writing	8
5.	Vocabulary and Grammar	5
	Internal Marks	25
	Total Marks	50

Unit 1. Status of English in India

- English as a global language.
- English as a Language of Science and Technology.
- English as a library language.

Unit 2. Listening and Speaking

- Phonetics and phonology : How sounds are produced, transmitted and received; stress, rhythm and intonation in pronunciation.

Unit 3. Reading

- Importance of reading.
- Reading strategies-word attach, inference, extrapolation

Unit 4. Writing

- Mechanics of writing-strokes and curves, capital and small letters, cursive and print script, punctuation.
- Different forms of writing : Formal and informal letters, messages, notices, posters, advertisements, note making, report writing, diary entry, resume (biodata/CV) writing.
- Controlled and gulded writing with verbal and visual inputs.
- Free and creactive writing.

Unit 5. Vocabulary and Grammar in context

- Synonyms, antonyms, homophones
- Word formation : Prefix, suffix, compounding
- Parts of speech
- Tense, modals
- Articles, determiners
- Types of sentences (assertive, interrogative, imperative, exclamatory)

सन्दर्भित पुस्तकें

Proficiency in English —Dr. Renu Pandey/Dr. Reenu Singh

योग शिक्षा
(Yoga Education)
(प्रश्न-पत्र 7)

पूर्णांक—50

बाह्य अंक—25

आंतरिक अंक—25

इकाईवार अंकों का विभाजन

क्रमांक	इकाई	विषय	अंक
1.	1	योग का परिचय (Introduction to Yoga)	5
2.	2	पतंजलि के समय और पंतजलि के पश्चात् योग का विकास (Patanjali Yoga and post Patanjali developments)	5
3.	3	योग एवं ध्यान की अन्य महत्वपूर्ण प्रणालियाँ (Other Important system of Yoga and meditation)	7

4.	4	शरीर रचना विज्ञान और मानसिक स्वास्थ्य पर योग का प्रभाव (Effect of yoga on Physiology and mental health)	8
		आंतरिक अंक	25
		कुल अंक	50

इकाई 1. योग का परिचय (Introduction to Yoga)

- योग का अर्थ एवं परिभाषा, योग का क्षेत्र, योग के उद्देश्य, योग के प्रकार (भक्ति योग, कर्मयोग, ज्ञानयोग, हठयोग, मन्त्रयोग, लययोग, कुण्डलिनी योग), योग व व्यायाम में अन्तर, योग के पूरक व्यायाम–सूक्ष्म यौगिक क्रियायें, शिक्षक एवं विद्यार्थियों के लिए योग का महत्व।
- योग का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य–पतंजलि से पूर्व में योग की स्थिति (सिन्धु घाटी की सभ्यता, वैदिककाल, उपनिषदकाल, रामायाणकाल महाभारतकाल) सांख्य और योग, जैन धर्म एवं योग बौद्ध धर्म एवं योग।

इकाई 2. पतंजलि के समय और पतंजलि के पश्चात् योग का विकास (Patanjali Yoga and post patanjali developments)

- महर्षि पतंजलि द्वारा योग का सुव्यवस्थीकरण, अष्टांग योग का परिचय-नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि, महर्षि पतंजलि का योग के क्षेत्र में योगदान।
- पतंजलि के पश्चात् योग का विकास–योग के विभिन्न ग्रथों का सामान्य परिचय-योगसूत्र, घेरण्डसंहिता, हठयोग प्रदीपिका, आधुनिक युग में योग का पुनर्जागरण।
- योग के क्षेत्र में विभिन्न योग संस्थाओं का योगदान; जैसे–कैवल्यधाम लोनावाला; बिहार योग विद्यालय मुंगेर; स्वामी विवेकानन्द योग अनुसंधान संस्थान, बैंगलोर; दिव्य जीवन संघ शिवानन्द आश्रम, ऋषिकेश; मोरार जी देशाई राष्ट्रीय योग अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली; केन्द्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली; पतंजलि योगपीठ हरिद्वार।

इकाई 3. योग एवं ध्यान की अन्य महत्वपूर्ण प्रणालियाँ (Calculation and other Important system of Yoga and Meditation)

- ध्यान का अर्थ, प्रकार एवं लाभ, ध्यान में उपयोगी एवं बाधक तत्व।
- पंचकोष की अवधारणा, भगवद्गीता और योग, ध्यानयोग–(गीता, अध्याय 6 में वर्णित श्लोक संख्या 10 से श्लोक संख्या 36 तक की व्याख्या) जप ध्यान, अजपाध्यान, पतंजलि के आधार पर ध्यान पद्धति।
- प्रेक्षा ध्यान अर्थ और उद्देश्य, विपश्यना ध्यान का अर्थ और उद्देश्य।

इकाई 4. शरीर रचना विज्ञान और मानसिक स्वास्थ्य पर योग का प्रभाव (Effect of yoga on Physiology and mental health)

- शारीरिक तन्त्रों पर योग का प्रभाव–परिसंचरण तन्त्र, कंकाल तन्त्र, पाचन तन्त्र, श्वसन तन्त्र, तन्त्रिकातन्त्र, उत्सर्जन तन्त्र।
- अन्तःस्रावी ग्रन्थियाँ का परिचय एवं उन पर योग का प्रभाव।
- मानसिक स्वास्थ्य, चिन्ता, अवसाद, तनाव कम करने में योग की भूमिका।

सत्रगत कार्य

योग अभ्यास और गतिविधियाँ (Practium and Suggested Activities) कोई 3 किये जायेंगे–

1. योग केन्द्र का भ्रमण करना और केन्द्र में आयोजित गतिविधियों पर आधारित प्रतिवेदन लिखना।
2. किसी एक योग अभ्यासकर्ता का साक्षात्कार लेना और उसके द्वारा अनुभव किए गए लाभों पर एक प्रतिवेदन लिखना।
3. योगासनों से सम्बन्धित जानकारी आधिकारिक स्रोतों से एकत्रित करना और उस पर एक प्रतिवेदन लिखना।
4. अपने सहयोगी समूह के समक्ष किसी पाँच आसनों को प्रदर्शित करना और उस पर एक प्रतिवेदन लिखना।

आसन

(क) ध्यानात्मक आसन–सुखासन, अर्ध पद्मासन, पद्मासन, सिद्धासन, सिद्धयोनिआसन, बज्रासन।

(ख) विश्रामात्मक आसन–योगनिद्रा, शवासन, मकरासन।

(ग) खड़े होकर किये जाने वाले आसन–ताड़ासान, पादहस्तासन, वृक्षासन, त्रिकोणासन, गरुणासन, उत्तानासन, अर्धकटिचक्रासन, उत्कटासन, पादांगुष्ठासन, वीरभद्रासन।

(घ) बैठकर किये जाने वाले आसन–बद्धकोणासन, वक्रासन, पश्चिमोत्तासन, शशांकासन, गोमुखासन-1 एवं 2, वीरासन, मारिच्यासन, जानुशीर्षासन, उष्ट्रासन, योगमुद्रा, सुप्त बज्रासन।

प्राणायाम

नाड़ी शोधन प्राणायाम, कपालभाति, भ्रामरी प्राणायाम, शीतली प्राणायाम, भस्त्रिका प्राणायाम, शीतकारी प्राणायाम तथा उज्जायी प्राणायाम।

सन्दर्भित पुस्तकें

योग शिक्षा —डॉ. नेत्रा रावणकर

हिन्दी भाषा शिक्षण
Hindi Language Teaching
(प्रश्न पत्र–8)

पूर्णांक अंक–100
बाह्य मूल्यांकन–70
आंतरिक मूल्यांकन–30

इकाईवार अंकों का विभाजन

सरल क्र.	इकाई	इकाई नाम	अंक
1.	1	हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्य और कक्षा प्रतिक्रिया	13
2.	2	हिन्दी भाषा शिक्षण के कौशल	12
3.	3	भाषा शिक्षण के कौशल	12
4.	4	गद्य और पद्य शिक्षण	13
5.	5	व्यावहारिक व्याकरण	10
6.	6	मूल्यांकन	10
		आंतरिक अंक	30
		कुल योग	100

इकाई 1. हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्य और कक्षा प्रतिक्रिया

- हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्य
- माध्यम भाषा/प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी का स्वरूप
- हिन्दी भाषा का अधिग्रहण और उस संदर्भ में कक्षा की प्रतिक्रिया
- शिक्षण की भूमिका।

इकाई 2. हिन्दी भाषा शिक्षण के कौशल

- सुनना और इस कौशल से क्या आशय है?
- हिन्दी भाषा की कक्षा में सुनना कौशल का विकास संबंधी गतिविधियाँ
- बोलने के कौशल का आशय
- हिन्दी भाषा कक्षा में बोलना कौशल के विकास के लिए गतिविधियाँ (गीत, कविता, संवाद, संभाषण, विडियो, सिनेमा)।

इकाई 3. भाषा शिक्षण के कौशल

- पढ़ना कौशल से तात्पर्य
- हिन्दी भाषा कक्षा में पढ़ने के कौशल से सम्बधित गतिविधियाँ–विषयवस्तु का वाचन, वाचन पश्चात् अपने अनुभाव से जोड़ना-1 विभिन्न प्रकार की पठनीय सामग्री का वाचन कर उसका आनन्द उठाना।

- ❖ हिन्दी भाषा की कक्षा में पढ़ने के कौशल विकास के लिए रणनीति—पढ़ने के पूर्व और पढ़ने के बाद की गतिविधियाँ।
- ❖ लेखन के कौशल से तात्पर्य
- ❖ हिन्दी भाषा के कक्षा में लेखन कौशल के विकास के लिए गतिविधियाँ।

इकाई 4. गद्य और पद्य शिक्षण

- ❖ गद्य और पद्य शिक्षण के उद्देश्य
- ❖ हिन्दी भाषा को कक्षा, लेख, व्यंग, निबंध आदि शिक्षण की पाठ योजना बनाना और कक्षा की प्रतिक्रिया।

इकाई 5. व्यावहारिक व्याकरण

- ❖ कक्षा के स्तरानुरूप व्याकरण तत्व का रचनात्मक पद्धति से शिक्षण
- ❖ व्याकरण के खेल/गतिविधि।

इकाई 6. मूल्यांकन

- ❖ हिन्दी भाषा कक्षा का रचनात्मक मूल्यांकन
- ❖ हिन्दी भाषा की कक्षा में योगात्मक मूल्यांकन
- ❖ आकलन/मूल्यांकन का रख-रखाव, टीप लिखना, फीडबैक।

सन्दर्भित पुस्तकें

हिन्दी भाषा शिक्षण —डॉ. पंकज भास्कर/सुदेश बाला जैन

संस्कृत भाषा शिक्षण
Sanskrit Education
(प्रश्न-पत्र-4) (वैकल्पिक)

पूर्णांक—100
बाह्य अंक—70
आंतरिक अंक—30

इकाईवार अंकों का विभाजन

क्रमांक	इकाई	विषय	अंक
1.	1	संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य एवं कक्षा प्रक्रियाएँ	12
2.	2	भाषा शिक्षण के कौशल-सुनना	13
3.	3	भाषा शिक्षण के कौशल-पढ़ना	12
4.	4	गद्य एवं पद्य शिक्षण	13

5.	5	व्यावहारिक व्याकरण	10
6.	6	मूल्यांकन	10
		आंतरिक अंक	**30**
		कुल अंक	**100**

इकाई 1. संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य एवं कक्षा प्रक्रियाएँ

- संस्कृत शिक्षण के उद्देश्य
- द्वितीय भाषा के रूप में संस्कृत की कक्षा का स्वरूप
- भाषा का अधिग्रहण और इसके संदर्भ में कक्षा की प्रक्रियाएँ
- द्वितीय भाषा के शिक्षण के रूप में संस्कृत शिक्षक की भूमिका।

इकाई 2. भाषा शिक्षण के कौशल-सुनना

- सुनने का तात्पर्य
- संस्कृत की कक्षा में श्रवण कौशल के विकास की गतिविधियाँ
- बोलने का तात्पर्य
- संस्कृत की कक्षा में बोलने के कौशल के विकास की गतिविधियाँ (संस्कृत गीत, कहानी, संवाद, संभाषण आदि के द्वारा)

इकाई 3. भाषा शिक्षण के कौशल-पढ़ना

- पढ़ना यानी क्या?
- संस्कृत की कक्षा में पठन गतिविधियाँ—पाठ्यपुस्तक को संस्कृत माध्यम से पढ़ना, पढ़कर उसे अनुभवों से जोड़ना, विविध तरह की पाठ्यसामग्री को पढ़कर उसका आनंद ले पाना।
- संस्कृत की कक्षा में पढ़ने की रणनीतियाँ—किसी पाठ्यवस्तु को पढ़ने से पूर्व पढ़ने के दौरान और पढ़ने के बाद अपनाई जाने वाली रणनीतियाँ
- लिखना यानी क्या?
- संस्कृत की कक्षा में बच्चों को मौलिक लेखन के कौशल के विकास हेतु की जाने वाली गतिविधियाँ।

इकाई 4. गद्य एवं पद्य शिक्षण

- गद्य एवं पद्य शिक्षण के उद्देश्य
- संस्कृत की कहानी, आलेख, निबंध आदि को पढ़ाने की पाठयोजना एवं कक्षा प्रक्रियाएँ
- संस्कृत की कविता, गीत, श्लोक आदि को पढ़ाने की पाठयोजना एवं कक्षा प्रक्रियाएँ।

इकाई 5. व्यावहारिक व्याकरण

- कक्षानुसार व्याकरण के तत्वों को रचनात्मक तरीके से पढ़ाने के तरीके
- व्याकरण के खेल/गतिविधियाँ।

इकाई 6. मूल्यांकन

- संस्कृत की कक्षा में रचनात्मक (मौलिक/लिखित) मूल्यांकन
- संस्कृत की कक्षा में योगात्मक मूल्यांकन
- मूल्यांकन/आकलन के दस्तावेजों का संधारण, टिप्पणी लेखन, फीडबैक।

सन्दर्भित पुस्तकें

संस्कृत भाषा शिक्षण —डॉ. देवर्षि कुमार शुक्ल/ डॉ. सुकीर्ति सिंह सिकरवार

Pedagogy of English Language
First Year
(For Primary)
(Question Paper-9)

Maximum Marks : 100
External : 70
Internal : 30

Unit-wise division of marks

Unit S. No.	Unit Name	Marks allotted
1.	Teaching of English at the elementary level	10
2.	Approaches to teaching of English	15
3.	Classroom transaction process	15
4.	Curriculum, text book and Material developme.	15
5.	Planning and Assesment	15
	Internal Marks	**30**
	Total	**100**

The theory paper will comprise of the five units :

Unit 1. Teaching of English at the Elementary Level

- Issues of learning English in a multilingual multicultural society.
- Issues of teaching English as second language at (a) Early primary-class I and II, (b) Primary-class III, IV and V.
- Learner socio-Cultural background and need learning English.

Unit 2. Understanding of Textbooks and Approaches to the Teaching of English

- The cognitive and constructive approach-nature and role of learner, catering to different types of learners, age of learnning, learning style, teaching large classes, socio-cultural pace factors and socio-psychological factors.
- Behaviouristic approach-direct method, grammar-translation method, structural, approval, communicative approach, state specific methods-Activity Based Learning (ABL) and Active learning Methodology (ALM)

The internal assessment will be done on the following two sub-sections.

Unit 3. Classroom transaction process

- Stating learning outcomes and achieving them
- Pair work, group work
- Use of story telling, role play, drama, songs as pedagogical tools.
- Pre-reading, reading and Post-reading, objectives and processes.
- Questioning to promote thinking.
- Dealing with textual exercises.

The internal assessment will be done on the following section :

A. Preparing teaching plan (five) using constructive approch and including at least three of the following activities :
   (i) pair work
   (ii) group work
   (iii) story telling
   (iv) role-play
   (v) drama
   (vi) songs/rhymes
   (vii) questioning to promote thinking.

B. Peer analysis of the lession plan

C. Suggested ICT activities :
   - Searching and dowloading lesson plan based on constructivist approch.
   - Edit, moderate and contextalize at least one leason plan.
   - Present lesson plan digitally (on LCD projection or on smartphone).

Unit 4. Curriculum, textbook and material development.

- Preparing material for young learners.
- Using local resources.
- Using open resource (OER's) text, video, audio.
- Analyzing and receiving teaching-learning materials and OER's.
- Academic standards, learning indicators and learning outcomes.
- Need and process of curriculum revision
- Text analysis of school textbooks for English.

Unit 5. Planning and Assessment

- Planning for teaching
- Year plan, unit plan and period plan.
- Teacher's reflection on their own teaching learning practices.
- Continuous and comprehensive evaluation (CCE).
- Monitoring of learning and giving feed back.

सन्दर्भित पुस्तकें

Proficiency in English Language —Dr. V. K. Mishra/ Ekta Kaur

प्रथम वर्ष—गणित शिक्षण
(पूर्व प्राथमिक और प्राथमिक के लिए)
Pedagogy of Mathematics Education (for Early Primary and Primary School)
(प्रश्न पत्र-10)

पूर्णांक—100

बाह्य अंक—70

आन्तरिक अंक—30

इकाईवार अंकों का विभाजन

क्रमांक	इकाई	विषय	अंक
1.	1	गणित से परिचय (Introduction to Mathematics)	10
2.	2	गणित शिक्षण सिद्धांत और शिक्षण विधियाँ (Mathematics Teaching Principles and Teaching Method)	15
3.	3	गणना, संख्याएँ एवं उनकी संक्रियाएँ (Counting, Numbers and its Operations)	10
4.	4	ज्यामितीय आकार एवं पैटर्न (Geometrical Shapes and Pattern)	10
5.	5	पाठ्यपुस्तकों और शिक्षा शास्त्र की समझ (Understanding of Text book and Pedagogy)	15
6.	6	कक्षा योजना एवं आकलन (Classroom Planning and assisment)	10
		आंतरिक अंक	30
		कुल अंक	100

इकाई 1. गणित से परिचय (Introduction of Mathematics)

- गणित क्या है और जीवन में यह कहाँ-कहाँ है?
- हम गणित क्यों पढ़ाते हैं?
- दैनिक जीवन में गणित की क्या आवश्यकता व महत्व है?
- गणित के आयाम—अवधारणा, प्रक्रिया, प्रतीक व भाषा।
- गणितीकरण।

इकाई 2. गणित—शिक्षण सिद्धान्त और शिक्षण विधियाँ (Mathematics Teaching Principles and Teaching Method)

- सीखने वाले को समझना
- सीखने की प्रक्रिया को समझना
- सीखने एवं शिक्षण की त्रुटियाँ
- गणित सीखने एवं सिखाने की विधियाँ—आगमनात्मक और निगमनात्मक (Induction and Deduction), विशिष्टीकरण एवं सामान्यीकरण, गणित के सिद्धान्त।

इकाई 3. गणना, संख्याएँ एवं उनकी संक्रियाएँ (Counting, Numbers and its Operations)

- संख्या-पूर्व अवधारणाएँ।
- संख्या की समझ एवं प्रस्तुति।
- अंक और संख्या।
- गणना और स्थानीयमान।
- भिन्न की अवधारणा और उसकी प्रस्तुति।
- संख्याओं और गणितीय संक्रियाएँ।

इकाई 4. ज्यामितीय आकार एवं पैटर्न (Geometrical Shapes and Pattern)

आकृतियों के प्रकार—द्विविमीय एवं त्रिविमीय (2 डी. और 3 डी.)।

- आकृतियों की समझ—परिभाषा, आवश्यकता और अन्तर।
- गणित में विभिन्न आकारों की समझ।
- पैटर्न—परिभाषा, आवश्यकता और प्रकार।
- संख्याओं और आकृतियों में पैटर्न की समझ।

इकाई 5. पाठ्यपुस्तकों और शिक्षा शास्त्र की समझ (Understanding of Text book and Pedagogy)

गणित की पाठ्यपुस्तकों के विकास के लिए दार्शनिक और मार्गदर्शी सिद्धान्त।

- गणित शिक्षण के लिए विषयवस्तु, दृष्टिकोण तथा विधि—संवादमूलक और सहभागी तरीका, एक सुविधादाता के रूप में शिक्षक।
- विषय (Theme), इकाई की संरचना, अभ्यास की प्रकृति और उसके प्रभाव।

- अकादमिक मानक और सीखने के संकेतक।
- गणितीय पाठ्यचर्या के प्रभावी अंतरण (transaction) के लिए अधिगम स्रोत (Learning Resources)।

इकाई 6. कक्षा योजना एवं आकलन (मूल्यांकन) (Classroom Planning and assisment)

- शिक्षण तैयारी—गणित शिक्षण के लिए योजना, वार्षिक योजना, इकाई योजना और कालखण्ड योजना।
- योजना का आकलन (मूल्यांकन)।
- आकलन व मूल्यांकन—परिभाषा, आवश्यकता एवं महत्व।
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन आकलन (CCE)—अधिगम के लिए आकलन, अधिगम का आकलन, रचनात्मक आकलन एवं उपकरण, योगात्मक आकलन, भारिता टेबल (वेटेज टेबल), पृष्ठपोषण एवं रजिस्टर।

डी. एल. एड. मध्य प्रदेश पाठ्यक्रम, द्वितीय वर्ष

D.EL. Ed. Syllabus for Second Year

द्वितीय वर्ष

सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम

क्र.	पाठ्यक्रम शीर्षक	प्रश्न पत्र	प्रस्तावित कालखण्ड	बाह्य मूल्यांकन	आन्तरिक मूल्यांकन	पूर्णांक
1.	संज्ञान अधिगम और बाल विकास (Cognition Learning and the Development of Children)	11	80	70	30	100
2.	समाज, शिक्षा और पाठ्यचर्या बोध (Understanding of Society, Education and Curriculum)	12	80	70	30	100
3.	शिक्षा में समावेशी एवं जेण्डर मुद्दे (Emerging Gender and Inclusive Perspectives in Education)	13	80	70	30	100
4.	शालेय संस्कृति, नेतृत्व और शिक्षक विकास (School Culture, Leadership and Teacher Development)	14	80	70	30	100
5.	Proficiency in English	15	50	25	25	50
6.	योग शिक्षा Yoga Education (Second Year)	16	50	25	25	50
7.	पर्यावरणीय अध्ययन शिक्षण (Pedagogy of Environmental Studies (for early Primary and Primary))	17	80	70	30	100
8.	वैकल्पिक विषय शिक्षण (Optional Pedagogy Courses) (अ) सामाजिक विज्ञान शिक्षण (Pedagogy of Social Science) (ब) अंग्रेजी भाषा शिक्षण (Pedagogy of English Language) (स) गणित शिक्षण (Pedagogy of Mathematics) (द) विज्ञान शिक्षण (Pedagogy of Science)	18	80	70	30	100
	योग		580	470	230	700

द्वितीय वर्ष

व्यावहारिक पाठ्यक्रम

क्र.	पाठ्यक्रम शीर्षक	प्रश्न पत्र	प्रस्तावित कालखण्ड	बाह्य मूल्यांकन	आन्तरिक मूल्यांकन	पूर्णांक
1.	कार्य और शिक्षा (Work and Education)	4	24	25	25	50
2.	रचनात्मक नाटक, ललित कला और शिक्षा (Creative Drama, Fine Art and Education)	5	10	25	25	50
3.	बच्चों का शारीरिक-भावनात्मक स्वास्थ्य और शिक्षा (Children's Physical-Emotional Health and Health Education)	6	10	25	25	50
4.	इण्टर्नशिप (शाला स्थानबद्ध कार्यक्रम) (Teaching Practice and School Internship)	—	96 दिन	200	200	400
	योग			275	275	550
	(सैद्धान्तिक + व्यावहारिक + Internship) महायोग					1250

पाठ्यक्रम : द्वितीय वर्ष

एकादशम् प्रश्न पत्र : संज्ञान, अधिगम और बाल विकास

उद्देश्य—(1) छात्राध्यापकों में शिक्षण और अधिगम के मनोवैज्ञानिक आधार की समझ बनाना। (2) चिन्तन की प्रक्रिया को समझना। विभिन्न सिद्धान्तों/परिप्रेक्ष्यों के माध्यम से बच्चों में अधिगम को समझना, जो उनके शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में प्रतिबिम्बित हों। (3) विकास और सार्वभौमिक संस्कृति, विभिन्न सिद्धान्त/परिप्रेक्ष्य के योगदान को सम्पूर्ण रूप से समझना। (4) बच्चों को ध्यान में रखकर सिद्धान्तों को लागू करना/छात्राध्यापकों को अवसर प्रदान करना जिससे वे सिद्धान्त और वास्तविक जीवन में बच्चों की अन्त:क्रिया में सम्बन्ध स्थापित करें। (5) सीखने और सिखाने की प्रक्रिया को समझना। (6) शिक्षा के सिद्धान्तों को समझते हुए छात्र-शिक्षकों को शिक्षण में सक्षम करना। (7) उन कारकों की समझ बनाना जो सीखने में सुविधा प्रदान करते हैं। (8) सीखने के सिद्धान्तों को समझने के लिये छात्र शिक्षक को सक्षम बनाना और उन्हें पाठ्यक्रम नियोजन और पाठ्यक्रम अन्तरण के लिये निहितार्थ करना।

इकाई 1 : अधिगम की अवधारणा एवं प्रक्रिया—अधिगम : अधिगम की अवधारणा एवं प्रकार (गैग्ने का वर्गीकरण)। (1) बच्चों के सीखने की प्रक्रिया : अधिगम एवं स्मृति में सुधार, स्मृति संग्रहण, अवहेलना, विस्मृति। (2) अधिगम एवं स्मृति : स्मृति संग्रहण, अधिगम का हस्तान्तरण, व्यवहार के आधारभूत सिद्धान्त एवं शैक्षिक निहितार्थ। (3) अधिगम की कठिनाइयों की अवधारणा एवं प्रकार। (4) सीखने में व्यक्तिगत और सामाजिक सांस्कृतिक विविधता।

इकाई 2 : बचपन में अवधारणा निर्माण एवं चिन्तन प्रक्रिया—अवधारणा निर्माण— (1) अवधारणा का अर्थ : अवधारणा निर्माण में होने वाली मानसिक प्रक्रियाएँ। (2) बचपन में अवधारणाओं के विकास को प्रभावित करने वाले कारक। (3) समय, स्थान, कार्य-कारण एवं स्वयं की अवधारणाओं का विकास। (4) अवधारणा अधिगम का ब्रूनर मॉडल। (5) पियाजे का मानसिक विकास का सिद्धान्त, जीन पियाजे और अन्य मनोवैज्ञानिकों के अवधारणा निर्माण के बारे में विचार। **चिन्तन एवं तर्क—** (1) चिन्तन की अवधारणा एवं प्रकृति। (2) चिन्तन के साधन : ध्यान प्रत्यक्षीकरण, छवि, अवधारणा, प्रतीक, चिह्न, सूत्र। (3) चिन्तन के अनुकूल एवं प्रतिकूल परिस्थितियाँ। (4) चिन्तन एवं अधिगम के बीच सम्बन्ध।

इकाई 3 : संज्ञान एवं अधिगम— (1) निर्माणवाद : अवधारणा का परिचय, पियाजे का सिद्धान्त, अधिगम क्या है, संज्ञानात्मक विकास की संरचनाएँ एवं प्रक्रियाएँ, विभिन्न अवस्थाओं में संज्ञानात्मक द्वन्द्व के लक्षण, अधिगम के सन्दर्भ में इसका महत्त्व। (2) वायगोत्सकी का सिद्धान्त : परिचय, सामान्य अनुवांशिकता सम्बन्धी नियम, जेडपीडी (ZPD) की अवधारणा, विकास में उपकरण और प्रतीक, शिक्षण के सन्दर्भ में इसका महत्त्व। (3) सूचना सम्प्रेषण उपागम : मस्तिष्क की बुनियादी बनावट (कार्यकारी स्मृति, दीर्घकालिक स्मृति, अवधान) कूटरचना (encoding) एवं पुनःप्राप्ति (retrieval), मुखर स्मृति (declarative memory) में बदलाव के रूप में ज्ञान की रचना एवं अधिगम, स्कीमा परिवर्तन या अवधारणात्मक परिवर्तन, किस तरह ये एक सतत् चलन में विकसित होते हैं। (4) संज्ञान में वैयक्तिक एवं सामाजिक-सांस्कृतिक अन्तर : अधिगम कठिनाइयों को समझना, बहिष्करण एवं समावेशन की स्थितियाँ एवं प्रभाव।

इकाई 4 : भाषा एवं सम्प्रेषण— (1) बच्चे किस तरह सम्प्रेषण करते हैं? (2) भाषा विकास के सम्बन्ध में दृष्टिकोण : किस प्रकार बच्चे इसे सीखते हैं। (बच्चे शुरूआती उम्र में किस तरह भाषा सीखते हैं, के सन्दर्भ में)। (3) प्रारम्भिक आयु में भाषा। (4) स्किनर का सक्रिय अनुबन्ध का सिद्धान्त, सामाजिक अधिगम के बारे में बन्दूरा और वाल्टर का सिद्धान्त। (5) जन्मजातवादी-चोम्स्कीवादी (Nativist-Chomskian) का दृष्टिकोण। (6) व्यवहारवाद की समालोचना की दृष्टि से सैद्धान्तिक दृष्टिकोण की तुलना। (7) भाषा के उपयोग : बातचीत में भागीदारी, संवाद, वार्तालाप करना और सुनना। (8) भाषा में सामाजिक सांस्कृतिक विविधता : उच्चारण, संवाद में अन्तर, भाषायी विविधता, बहुसांस्कृतिक कक्षा के लिये इनका महत्त्व। (9) द्विभाषी एवं त्रिभाषी बच्चे : शिक्षकों के लिये इसका महत्त्व—बहुभाषिक कक्षा, शिक्षण विधि के रूप में कहानी कहना।

इकाई 5 : खेल, स्व एवं नैतिक विकास— (1) खेल का अर्थ, विशिष्टताएँ एवं प्रकार। (2) खेल एवं इसके कार्य : बच्चों के शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक, संज्ञानात्मक, भाषा एवं स्नायु विकास (Motor development) से इसका सम्बन्ध, बच्चों के खेल में सांस्कृतिक एवं सामाजिक आर्थिक स्तर का प्रभाव। (3) खेल एवं समूह गतिकी की अवधारणा (Group dynamics) : खेलों के नियम, बच्चे किस तरह मतभेदों को सुलझाना एवं निपटाना सीखते हैं। (4) स्वयं का बोध, स्व-विवरण, स्वयं की पहचान, स्वाभिमान का विकास, सामाजिक तुलना, आत्मसात करना एवं स्व-नियन्त्रण। (5) नैतिक विकास : इस सन्दर्भ में कोलबर्ग एवं कैरोल गिलिगन का नैतिक विकास के समालोचनात्मक विचार।

पुस्तक का नाम— 'राधा' संज्ञान, अधिगम और बाल विकास मूल्य : 240.00
ISBN : 9789386445964

द्वादश प्रश्न पत्र : समाज, शिक्षा और पाठ्यचर्या बोध

उद्देश्य— (1) शिक्षा का अर्थ, उद्देश्य एवं महत्त्व को समझना। (2) शिक्षा के दार्शनिक, सामाजिक और ऐतिहासिक आयामों की समझ विकसित करना। (3) ज्ञान, विद्यार्थी, शिक्षक और शिक्षा के बारे में लम्बे समय से प्रचलित धारणाओं की पड़ताल करना और एक अर्थपूर्ण समझ विकसित करना। (4) छात्राध्यापकों की अलग-अलग तरह की विचारधारा एवं दृष्टिकोण से परिचित कराना जिससे वे एक सुरक्षित, समतावादी और सीखने-सिखाने का एक अच्छा माहौल तैयार कर सकें।

इकाई 1 : शिक्षा की दार्शनिक समझ— (1) मानव समाज में शिक्षा की प्रकृति और उसकी आवश्यकता एवं महत्त्व। (2) विद्यालयीन शिक्षा एवं शिक्षा के बीच सम्बन्ध और मानव समाज में विविध शैक्षिक प्रक्रियायों की जाँच पड़ताल। (3) विभिन्न पश्चिमी एवं भारतीय विचारकों के द्वारा विद्यालयीन शिक्षा एवं शिक्षा पर विचार : रूसो, ड्यूवी, मॉण्टेसरी, गाँधी, टैगोर, गिजुभाई, अरविन्दो। (4) मानव प्रकृति, समाज, अधिगम और शिक्षा के उद्देश्य के बारे में मूलभूत धारणाओं की समझ।

इकाई 2 : शिक्षा के उद्देश्य— (1) शिक्षा के उद्देश्य एवं लक्ष्य (उद्देश्य एवं मूल्य)। (2) सामाजिक बदलाव एवं सामाजिक रूपान्तरण के लिये शिक्षा। (3) निम्नांकित बुनियादी अवधारणाओं को बच्चों की शिक्षा के सम्बन्ध में समझना—(अ) सामाजिक विषमता और समानता, संसाधनों के बँटवारे, अवसरों एवं बुनियादी जरूरतों की उपलब्धता। (ब) समता। (स) गुणवत्ता। (द) अधिकार एवं कर्त्तव्य, शाला प्रबन्ध समिति का गठन, प्रक्रिया एवं भूमिका। (य) मानव एवं बालक अधिकार। (र) सामाजिक न्याय : भारतीय संविधान की प्रस्तावना एवं उसकी मूलभूत अवधारणाएँ, मौलिक अधिकारों को सुनिश्चित करने में शिक्षा की भूमिका।

इकाई 3 : शिक्षा, राजनीति एवं समाज— (1) ब्रिटिशकाल के दौरान भारत में शिक्षा। (2) भारतीय समकालीन शिक्षा : औपनिवेशिक विरासत की निरन्तरता एवं उससे हटकर। (3) धर्म, जाति, लिंग एवं धर्मों के सन्दर्भ में वर्चस्व के पुनरुत्पादन में और हाशियाकरण को चुनौती देने में शिक्षा की भूमिका। (4) शिक्षा की राजनैतिक प्रकृति। (5) शिक्षक एवं समाज : शिक्षकों के स्तर का समालोचनात्मक आकलन।

इकाई 4 : ज्ञान— (1) बच्चों में ज्ञान का निर्माण : गतिविधि एवं अनुभव में ज्ञान अर्जन करना। (2) ज्ञान का स्वरूप एवं बच्चे ज्ञान का निर्माण कैसे करते हैं (ज्ञान और सीखना)। (3) मान्यता, जानकारी, ज्ञान एवं समझ की अवधारणा। (4) ज्ञान के प्रारूप : विविध प्रकार के ज्ञान एवं उनकी वैधता प्रक्रियाएँ। (5) पाठ्यचर्या के चयन एवं निर्माण की प्रक्रियाएँ एवं मापदण्ड। (6) देश/राज्य के विभिन्न पाठ्यचर्या की रूपरेखा जैसे (NCF 2005)। (7) पाठ्यचर्या निर्माण और उसके विकास के उपागम। (8) बच्चों का विकास एवं पाठ सम्बन्धी अनुभवों का संयोजन, पाठ्यचर्या, शिक्षण विधि एवं बच्चों का आकलन।

पुस्तक का नाम— 'राधा' समाज, शिक्षा और पाठ्यचर्या बोध मूल्य : 260.00
ISBN : 9789387256484

त्रयोदश प्रश्न पत्र : शिक्षा में समावेशी एवं जेण्डर मुद्दे

उद्देश्य—(1) समावेशी शिक्षा की समीक्षात्मक समझ विकसित करना। (2) सीखने में पाठ्यचर्या, शाला संगठन और शिक्षण उपागम में मौजूद भेदभावपूर्ण रवैया कैसे बाधा बनता है समझना। (3) स्कूल की संरचना/व्यवस्था (अन्तर्निहित एवं स्पष्ट) किस प्रकार से सभी बच्चों को समावेशी शिक्षण प्रक्रिया में शामिल करने में बाधक है उसे समझना। (4) भारतीय कक्षा में असमानता एवं विविधता को सम्बोधित करने के लिये ऐसी पाठ्यचर्या एवं शिक्षणशास्त्र तैयार करना जो सभी बच्चों को शिक्षण प्रक्रिया से जोड़ सके जिसमें विशेष आवश्यकता वाले बच्चे भी शामिल हों। (5) पाठ्यचर्या और उसको लागू करने में जीवन कौशल और मूल्यों को सम्मिलित करने की आवश्यकता को समझना। (6) स्थानीय एवं वैश्विक वातावरण के प्रति संवेदनशीलता विकसित करना जिससे अपने भीतर, प्राकृतिक और सामाजिक वातावरण के साथ सामंजस्य बन सके। (7) समाज में मौजूद जेण्डर असमानता की समीक्षात्मक समझ बनाना। (8) शाला में जेण्डर असमानता कैसे फलती-फूलती है उसे समझना और जेण्डर समानता लाने में शिक्षा की भूमिका को समझना।

इकाई 1 : समावेशी शिक्षा—(1) भारतीय शिक्षा में समावेशन एवं बहिष्करण के रूप (समाज का हाशियाकृत वर्ग, जेण्डर, विशेष आवश्यकता वाले बच्चे)। (2) समावेशी शिक्षा का अर्थ। (3) भारतीय स्कूली कक्षा में गैर बराबरी एवं विविधता पर नजर : शिक्षाशास्त्रीय एवं पाठ्यचर्या सरोकार। (4) समावेशी शिक्षा के लिये आकलन की प्रकृति को समझना एवं उसकी पड़ताल।

इकाई 2 : विशेष आवश्यकता वाले बच्चे—(1) विशेष आवश्यकता एवं समावेशन के बारे में ऐतिहासिक एवं समकालीन दृष्टिकोण। (2) अधिगम कठिनाइयों के प्रकार। (3) विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की पहचान, आकलन एवं बातचीत। (4) विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के शिक्षण उपागम एवं कौशल।

इकाई 3 : जेण्डर, स्कूल एवं समाज—(1) पुरुषत्व एवं स्त्रीत्व की सामाजिक संरचना। (2) पितृसत्ता की अन्य सामाजिक संरचनाओं एवं पहचानों के साथ अन्तर्क्रिया। (3) स्कूल में जेण्डर पहचान का पुनः उभारना पाठ्यचर्या, पाठ्य पुस्तकें, कक्षा प्रक्रियाएँ एवं विद्यार्थी अध्यापक बातचीत। (4) कक्षा में जेण्डर समानता के लिये काम करना।

पुस्तक का नाम— 'राधा' शिक्षा में समावेशी एवं जेण्डर मुद्दे **मूल्य : 150.00**

ISBN : 9789386445995

चतुर्दशम् प्रश्न पत्र : शालेय संस्कृति, नेतृत्व एवं शिक्षक विकास

उद्देश्य—(1) छात्राध्यापकों को भारतीय शिक्षा प्रणाली की संरचना एवं प्रक्रियाओं से परिचित कराना। (2) शिक्षा प्रणाली की संरचना में प्रक्रियाओं के सन्दर्भ में स्कूल की संरचना और प्रबन्धन के विचार को स्पष्ट रूप से समझने में छात्राध्यापकों की सहायता करना। (3) किसी स्कूल की प्रभावशीलता के विशिष्ट सन्दर्भों को समझने में मदद करना। (4) किसी शालेय नेतृत्व एवं प्रबन्धन में बदलाव की समझ को विकसित करने में मदद करना। (5) शैक्षिक नेतृत्व, बदलाव के घटक और व्यावहारिक परियोजना कार्यों के बीच के सम्बन्धों को पहचान पाने में छात्राध्यापकों की मदद करना।

इकाई 1 : भारतीय शैक्षिक प्रणाली की संरचना एवं प्रक्रियाएँ—(1) विभिन्न प्रशासनिक प्रणालियों के अन्तर्गत शालाओं के प्रकार। (2) शैक्षिक पदाधिकारियों की भूमिका और जवाबदेही। (3) शाला और सहयोगी संगठनों के मध्य सम्बन्ध। (4) शालेय प्रबन्धन को प्रभावित करने वाली शिक्षा नीतियों की समझ और व्याख्या। (5) शालेय संस्कृति, संगठन, नेतृत्व और प्रबन्धन क्या है? शालेय संस्कृति निर्माण में शालेय गतिविधियों जैसे प्रार्थना सभा, वार्षिक उत्सव इत्यादि की क्या भूमिका है?

इकाई 2 : शाला प्रभावशीलता और शालेय मानदण्ड—(1) शालेय प्रभावशीलता क्या है, इसको कैसे मापेंगे? (2) शिक्षा के मानदण्डों की समझ और उनका विकास। (3) कक्षा प्रबन्धन एवं शिक्षक। (4) समावेशित शिक्षा की पाठ योजना, कक्षा व्यवस्थापन की तैयारी और समावेशी शिक्षा। (5) कक्षा-कक्ष में सम्प्रेषण तथा कक्षा में बहु-प्रज्ञता स्तर।

इकाई 3 : शाला नेतृत्व एवं प्रबन्धन—(1) प्रशासनिक नेतृत्व। (2) समूह नेतृत्व। (3) शिक्षाशास्त्रीय नेतृत्व। (4) परिवर्तन के लिये नेतृत्व। (5) बदलाव प्रबन्धन।

इकाई 4 : शिक्षा में बदलाव-सुगमता—(1) सर्व शिक्षा अभियान (SSA) के अनुभव। (2) शिक्षा में समानता। (3) बालिका शिक्षा—प्रोत्साहन और योजनाएँ। (4) शैक्षिक एवं शालेय सुधार के मुद्दे। (5) शिक्षा में परिवर्तन—तैयारी एवं सुविधा/सुविधा सेवा।

इकाई 5 : शिक्षक विकास की समझ—(1) शिक्षक-विकास, शिक्षक-शिक्षा और शिक्षक-प्रशिक्षण की अवधारणा। (2) शिक्षक का विकास, छात्र, प्रबन्धन एवं समुदाय पर प्रभाव। (3) भारत में शिक्षक-शिक्षा के विकास का एक संक्षिप्त परिचय। (4) वैश्विक परिदृश्य में शिक्षक शिक्षा का परिवर्तित होता स्वरूप। (5) पूर्व सेवाकालीन एवं सेवाकालीन शिक्षक शिक्षा : अवधारणा, प्रकृति, उद्देश्य और कार्यक्षेत्र (Scope)। (6) शिक्षक शिक्षा प्रणाली के विषय में विभिन्न आयोगों और समितियों की अनुशंसाएँ। (7) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 तथा इसके POA का शिक्षक शिक्षा प्रणाली पर प्रभाव। (8) IASE, DIET तथा CTE की भूमिका और कार्य। (9) UGC, NCERT, NCTE, NUEPA, SCERT आदि संस्थाओं का नेटवर्किंग, कार्य और भूमिका।

पुस्तक का नाम—'राधा' शालेय संस्कृति, नेतृत्व एवं शिक्षक विकास **मूल्य : 220.00**

ISBN : 9789386445971

पंचदशम् प्रश्न पत्र : Proficiency in English

Objectives–(1) To strengthen English language proficiency of the student teacher. (2) To brush up their knowledge of grammatical, lexical and discourse system in English. (3) To enable students to link with pedagogy. (4) To re-sequence units of study for those who many have no knowledge of English.

Unit 1 : Status of English in India–(1) English around us. (2) English as associated official language in multicultural India. (3) English as second /foreign language.

Unit 2 : Listening and Speaking–(1) Listening with comprehensive–simple instructions, public enhancements, telephone conversation, radio/TV. (2) Enhancing listening and speaking abilities through discussions, role

play, interaction radio instruction (IRI) programms. (3) Using role play, drama, story telling, poems and songs as a pedagogical tool. (4) Listening to oral discourses (speech, discussion, news, sports, commentary, interviews, announcements, aids etc.). (5) Producing oral discusses (speech, discussion, news, sport, sports, commentary, interviews, announcements, aids etc.).

Unit 3 : Reading–(1) Skill of reading, skimming, seaming, extensive and intensive reading, reading aloud, silent reading. (2) Reading for global and local comprehension. (3) Critical Reading–process postulates and strategies.

Unit 4 : Writing–Writing text and identifying their geatures. Texts may include discriptions, conversation, narratives, biographical sketches, plays, poems, letters, reports, reviews, notice, adverts, prochures etc. (1) Efiting text written by one self and others. (2) Error analysis.

Unit 5 : Vocabulary and Grammar–(1) Synonyms, antonyms, homophones, homographs, homonyms, phrasal verbs, idioms. (2) Word formation enrichment of vocabulary abbreviation. (3) Types of sentences (simple, complex and compound). (4) Classification of classes based on structure and function. (5) Voice, narration.

पुस्तक का नाम— 'Radha' Proficiency in English **मूल्य : 220.00**
ISBN · 9789387249073

षोडश प्रश्न पत्र : योग शिक्षा

उद्देश्य—(1) छात्र-शिक्षकों में जीवन की गुणवत्ता विकसित करने के लिये योग व्यवहारों के सिद्धान्तों की समझ पैदा करने हेतु। (2) उचित योग आसन को प्रदर्शित करने की योग्यता विकसित करना जिससे शारीरिक एवं मानसिक दशा विकसित हो और भावनात्मक सन्तुलन बना रहे। (3) युवाओं की मनोवैज्ञानिक क्रियाओं को विकसित करने में मदद करना जैसे जागरूकता, एकाग्रता एवं इच्छा शक्ति। (4) युवाओं में सहयोग की भावना को प्रोत्साहित करना। (5) भारतीय संस्कृति में उन व्यवहारों के लिये सम्मान विकसित करना जो अर्थपूर्ण एवं प्रासंगिक शैक्षिक रणनीतियों का समर्थन करती हैं। (6) आदर्श सामाजिक जीवन एवं ताकत का विकास करने के लिये अवसरों का निर्माण करना। (7) योग दर्शन की दार्शनिक अवधारणाओं के बारे में एक व्यापक विचार विकसित करना। (8) मानव जीवन के लिये योग की अवधारणा एवं व्यवहार में इसके आशय को समझना। (9) योग की अवधारणा को समझना एवं योग के विभिन्न सिद्धान्तों को व्यवहार में प्रदर्शित करना। (10) पतञ्जलि, अरबिन्दो एवं भगवद्गीता के योग सिद्धान्तों के विषय में एक अन्तरदृष्टि विकसित करना। (11) योग व्यवहार के उपचारात्मक महत्त्व के बारे में एक सम्पूर्ण विचार प्राप्त करना। (12) योग सिद्धान्त एवं इसकी आध्यात्मिक पवित्रता के बारे में अन्तरदृष्टि प्राप्त करना।

इकाई 1: योगाभ्यास के सिद्धान्त—आसन की परिभाषा एवं वर्गीकरण, आसन करते समय रखने वाली सावधानियाँ, आसनों का वर्गीकरण— ध्यानात्मक आसन, विश्रामात्मक आसन, शरीर सम्वर्धनात्मक आसन, खड़े होकर किये जाने वाले आसन, बैठकर किये जाने वाले आसन, पेट के बल लेटकर किये जाने वाले आसन, पीठ के बल लेटकर किये जाने वाले आसन, सूर्य नमस्कार का अर्थ, विभिन्न स्थितियाँ एवं लाभ।

इकाई 2 : प्राणायाम—प्राणायाम का अर्थ एवं प्रकार, पूरक, कुम्भक एवं रेचक का अर्थ, प्राणायाम के अभ्यास में पूरक, कुम्भक एवं रेचक का अनुपात, प्राण के भेद, मुख्य प्राण एवं उपप्राण तथा उनका परिचय (प्राण, अणान, समान, ध्यान, उदान) उपप्राण-नाग, कूर्म, कृंकल, देवदत्त, धनन्जय, प्राणायाम के अभ्यास में रखी जाने वाली सावधानियाँ।

इकाई 3 : बन्ध, मुद्रा एवं शुद्धि क्रियाएँ—(1) बन्ध का अर्थ, प्रकार, लाभ (जालन्धर बन्ध, उड्डियान बन्ध एवं मूलबन्ध)। (2) मुद्रा का अर्थ, प्रकार एवं लाभ (चिनमुद्रा, ज्ञानमुद्रा, ब्रह्ममुद्रा, योगमुद्रा, अश्वनीमुद्रा, शाम्भवीमुद्रा, अपानमुद्रा, पृथ्वीमुद्रा)। (3) शुद्धि क्रियाओं के प्रकार, अभ्यास की विधि, लाभ तथा आवश्यक सावधानियाँ (धौति, वसति, नेति, नौलि, त्राटक एवं कपालभाति)।

इकाई 4 : भारतीय योगियों का परिचय एवं उनका योगदान—महर्षि वशिष्ठ, महर्षि पतञ्जलि, आदिशंकराचार्य, गुरु गोरखनाथ, योगी भर्तृहरि, स्वामी शिवानन्द, स्वामी कुवल्यानन्द, स्वामी विवेकानन्द।

पुस्तक का नाम— 'राधा' योग शिक्षा **मूल्य : 90.00**
ISBN : 9789387256316

सप्तदशम् प्रश्न पत्र : पर्यावरणीय अध्ययन शिक्षण (पूर्व प्राथमिक एवं प्राथमिक स्तर के लिये)

उद्देश्य—(1) छात्राध्यापक को पर्यावरण अध्ययन के क्षेत्र को समझने एवं पाठ्यचर्या के विभिन्न दृष्टिकोण को आत्मसात् करने में मदद करना। (2) छात्राध्यापक एक सुविधादाता के रूप में बच्चों से विज्ञान एवं पर्यावरण से सम्बन्धित जिज्ञासाओं पर सवाल करना तथा इस विषय में चर्चा करने के लिये प्रेरित करना। (3) करके सीखने के दृष्टिकोण पर आधारित प्राथमिक स्तर (कक्षा 1-5 तक) की कक्षा योजना पाठ् योजना का विकास करना। (4) छात्राध्यापकों को पर्यावरण अध्ययन शिक्षण के उपयुक्त बालकेन्द्रित, अनुभव और गतिविधि आधारित तरीकों के लिये तैयार करना जिसमें शिक्षण बालकेन्द्रित, अनुभव, गतिविधि आधारित हो और जिससे पर्यावरण अध्ययन के कौशलों एवं दक्षताओं का विकास हो सके। (5) छात्राध्यापकों को बच्चों के सीखने की गति के आधार पर विभिन्न तरीकों से आकलन करने के लिये तैयार करना।

इकाई 1 : पर्यावरण अध्ययन की अवधारणाएँ—(1) पर्यावरण अध्ययन का अर्थ, क्षेत्र एवं महत्त्व, प्राथमिक स्तर पर पाठ्यचर्या का हिस्सा बनने के सन्दर्भ में इसका विकासक्रम। (2) एकीकृत रूप में पर्यावरण अध्ययन : विज्ञान, सामाजिक विकास और पर्यावरण शिक्षा से ली गयी समझ। (3) पर्यावरण अध्ययन पर विविध दृष्टिकोण, 'प्रशिका' कार्यक्रम (प्राथमिक शिक्षा में 'एकलव्य' का नवाचारी प्रयोग), एन.सी.एफ. (NCF) 2000, एन.सी.एफ. (NCF) 2005.

इकाई 2 : बच्चों के विचारों को समझना—(1) प्राथमिक स्तर के बच्चों के ज्ञान की प्रकृति एवं सीमाएँ। (2) बच्चों में ज्ञान अर्जन की विधियाँ। (3) स्थान और समय की अवधारणा। (4) पर्यावरण अध्ययन के सन्दर्भ में बच्चों की संज्ञानात्मक विकास की अवधारणाओं में पियाजे के अनुसार परिवर्तन। (5) पाठ्य पुस्तकों सहित पाठ्यचर्या सामग्री के विभिन्न प्राकल्पों (Sets) की समीक्षा (विश्लेषण)।

इकाई 3 : पर्यावरण अध्ययन का शिक्षण और आकलन—(1) पर्यावरण अध्ययन

में प्रक्रियाएँ : प्रक्रिया कौशल-सामान्य प्रयोग, अवलोकन, वर्गीकरण, समस्या समाधान, परिकल्पना रचना, प्रयोगों का अभिकल्प तैयार करना, परिणामों का अभिलेख, आँकड़ों का विश्लेषण, पूर्वानुमान, परिणामों की व्याख्या एवं अनुप्रयोग। (2) नक्शा एवं चित्र में अन्तर करना, नक्शा पढ़ना। (3) पूछताछ के तरीके : गतिविधियाँ, परिचर्चा, समूह कार्य, भ्रमण, सर्वेक्षण, प्रयोग आदि। (4) बच्चों के विचार एवं उनके अनुभव सीखने के साधन के रूप में उपयोग करना। (5) कक्षा शिक्षण में शिक्षक की सुविधादाता के रूप में भूमिका। (6) पर्यावरण अध्ययन—भाषा और गणित का एकीकरण। (7) कक्षा में सूचना संचार तकनीक (ICT) का उपयोग। (8) आकलन एवं मूल्यांकन—परिभाषा, आवश्यकता एवं महत्त्व। (9) आकलन की विभिन्न विधियाँ एवं भविष्य में अधिगम के लिये आकलन का उपयोग।

इकाई 4 : पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण की तैयारी—(1) योजना को प्रभावशाली बनाने की आवश्यकता। (2) पर्यावरण अध्ययन शिक्षण के कुछ उदाहरण। (3) बच्चों के वैकल्पिक दृष्टिकोण को समझना। (4) अवधारणा, चित्र एवं थीमैटिक वेब चार्ट्स (संकल्पना अवधारणा एवं विषयगत भेद नक्शे, चार्ट्स)। (5) इकाई योजना की रूपरेखा बनाना एवं उसका उपयोग। (6) संसाधन इकट्ठा करना। (7) स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सामग्री का उपयोग। (8) दृश्य श्रव्य एवं इलेक्ट्रोनिक सामग्री। (9) प्रयोगशाला/विज्ञान किट। (10) पुस्तकालय। (11) सहपाठी समूह अधिगम (बच्चों की आपसी बातचीत) का उपयोग।

इकाई 5 : पाठ्य पुस्तक एवं शिक्षण विधियाँ—पर्यावरण अध्ययन की पुस्तक तैयार करने के सन्दर्भ में मार्गदर्शक सिद्धान्त : सामाजिक, दार्शनिक एवं मनोवैज्ञानिक सन्दर्भ। (1) पर्यावरण अध्ययन शिक्षण हेतु विषयवस्तु, उपागम एवं शिक्षण विधियाँ—बातचीत आधारित एवं भागीदारपूर्ण विधियाँ, सुविधादाता (Facilitator) के रूप में शिक्षक। (2) इकाई की विषयवस्तु एवं संरचना, अभ्यास कार्य की प्रकृति एवं उसका क्रियान्वयन। (3) अधिगम के संकेतक एवं मापदण्ड। (4) प्रभावी शिक्षण के लिये अधिगम संसाधन।

इकाई 6 : कक्षा योजना एवं मूल्यांकन—(1) शिक्षण की तैयारी : पर्यावरण अध्ययन शिक्षण की योजना, सत्र योजना, इकाई योजना और कालखण्ड योजना। (2) योजना का मूल्यांकन। (3) चिन्तनशील (Reflective) शिक्षण एवं अधिगम की समझ। (4) मूल्यांकन की अवधारणा एवं महत्त्व, सीसीई (CCE)। (5) चिन्तनशील (Reflective) प्रश्नों की तैयारी एवं चयन। (6) सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE)—अधिगम के लिये आकलन, अधिगम का आकलन, रचनात्मक मूल्यांकन एवं उसके साधन, योगात्मक मूल्यांकन, मूल्य तुलना सारणी (वेटेज टेबल), फीडबैक एवं रिपोर्टिंग प्रक्रिया, अभिलेख एवं रजिस्टर।

पुस्तक का नाम— 'राधा' पर्यावरणीय अध्ययन शिक्षण **मूल्य : 240.00**

ISBN : 9789386445926

अष्टदशम् प्रश्न पत्र (वैकल्पिक) : (अ) सामाजिक विज्ञान शिक्षण

उद्देश्य—(1) इतिहास, भूगोल, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र के आधार पर समाज को समीक्षात्मक रूप से समझने और विश्लेषण करने का ज्ञान विकसित करना। (2) आँकड़े एकत्र करने, विश्लेषण करने और निष्कर्ष निकालने का कौशल विकसित करना। (3) सामाजिक विज्ञान के स्कूली पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम एवं पाठ्य पुस्तकों को समीक्षात्मक दृष्टि से विश्लेषण करना। (4) पाठ्यक्रम के अन्तरण के लिये इस तरह की विधियों को जानना

और उपयोग करना जो बच्चों में सामाजिक घटनाओं में जिज्ञासा उत्पन्न करे तथा समाज एवं सामाजिक संस्थाओं और उनके क्रियाकलापों को समीक्षात्मक एवं विचारात्मक दृष्टि से व्यक्त करने की क्षमताएँ विकसित कर सके। (5) स्वतन्त्रता, समानता एवं न्याय के मानवीय एवं संवैधानिक मूल्यों को समझकर विभिन्नता और विविधता का सम्मान कर सकें और समाज में उनके लिये मौजूद चुनौतियों को समझ सकें।

इकाई 1 : सामाजिक विज्ञान की प्रकृति—सामाजिक विज्ञान और सामाजिक अध्ययन : प्रकृति और क्षेत्र, बच्चों में उनके सामाजिक सन्दर्भ और वास्तविकताओं की समझ विकसित करने में सामाजिक अध्ययन का योगदान, इतिहास की प्रकृति एवं विषय क्षेत्र के सम्बन्ध में विविध दृष्टिकोण, इतिहासकार की भूमिका, इतिहास में दृष्टिकोण, स्रोत और सुबूत, नागरिक शास्त्र में यथा स्थितिवादी और सक्रियवादी/सामाजिक बदलाव का दृष्टिकोण, भूगोल के सम्बन्ध में विभिन्न नजरिये, सामाजिक विज्ञान को व्यवस्थित करने के सन्दर्भ में विभिन्न दृष्टिकोण, विषय केन्द्रित, मुद्दा केन्द्रित, एकीकृत सामाजिक अध्ययन एवं अन्तर्विषयक सामाजिक विज्ञान।

इकाई 2 : सामाजिक विज्ञान की पाठ्यचर्या एवं महत्त्वपूर्ण अवधारणाएँ—बदलाव एवं निरन्तरता की समझ, कारण एवं प्रभाव, समय सम्बन्धी दृष्टिकोण एवं बालश्रम, निम्नांकित के माध्यम से सामाजिक-स्थानिक अन्तर्क्रिया—(1) समाज : सामाजिक संरचना, सामाजिक वर्गीकरण, समुदाय एवं समूह। (2) सभ्यता : इतिहास, संस्कृति। (3) राज्य : अधिकार, राष्ट्र, राष्ट्र-राज्य एवं नागरिक। (4) क्षेत्र या अंचल : संसाधन, स्थान और लोग। (5) बाजार : विनिमय।

इकाई 3 : बच्चों की समझ, शिक्षण-अधिगम सामग्री एवं कक्षा प्रक्रियाएँ तथा उच्च प्राथमिक स्तर पर चुनौतियाँ—बच्चों का संज्ञानात्मक विकास एवं बच्चों में उनकी उम्र एवं सामाजिक-सांस्कृतिक सन्दर्भ में माध्यमिक/उच्च प्राथमिक कक्षाओं में अवधारणा का निर्माण, पाठ्यचर्या एवं शिक्षण विधियों के सन्दर्भ में इन कारकों का महत्त्व, अवधारणाओं की समझ के बारे में बच्चों की केस स्टडीज, बच्चे, सामाजिक विज्ञान के ज्ञान का निर्माण एवं कक्षा में अन्तर्क्रिया, सामाजिक विज्ञान के लिये समुदाय एवं स्थानीय स्रोतों सहित विविध शिक्षण अधिगम सामग्री, विषय के सम्बन्ध में नजरिया क्या और कैसा है और वे किस तरह बच्चों की समझ बनाते हैं, इसे समझने के लिये सामाजिक विज्ञान की विभिन्न पाठ्य पुस्तकों का विश्लेषण करना (केस स्टडीज के उपयोग, तस्वीरों, कहानियों/आख्यानों, सम्वाद और बातचीत, प्रयोगों, तुलना, अवधारणाओं के क्रमिक विकास आदि के आधार पर अवलोकन करें)। सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या के शिक्षण को समझने और उसका समालोचनात्मक मूल्यांकन करने के लिये कक्षाओं का अवलोकन।

इकाई 4 : शिक्षणशास्त्र एवं आकलन—शिक्षण विधियाँ : सामाजिक विज्ञान में अनुमान/खोज पद्धति, प्रोजेक्ट विधि, आख्यानों का उपयोग, तुलना, अवलोकन, संवाद एवं परिचर्चा, सामाजिक विज्ञान के विभिन्न विषयों में आँकड़े, इनके स्रोत एवं साक्ष्य की अवधारणा, तथ्य एवं मत के बीच अन्तर, पूर्वाग्रहों एवं झुकावों को समझना, तार्किक चिन्तन के लिये निजी/प्रायोगिक ज्ञान का इस्तेमाल, सामाजिक विज्ञान में जानकारी के पुनर्स्मरण पर आधारित मूल्यांकन पद्धति का प्रभुत्व, अधिगम का मूल्यांकन करने के वैकल्पिक तरीके, मूल्यांकन के आधार, प्रश्नों के प्रकार, खुली किताब परीक्षा का उपयोग आदि।

इकाई 5 : पाठ्य पुस्तकों एवं शिक्षणशास्त्र की समझ—(1) सामाजिक अध्ययन की पाठ्य पुस्तकें तैयार करने हेतु दर्शन एवं मार्गदर्शक सिद्धान्त। (2) सामाजिक अध्ययन शिक्षण के लिये विषयवस्तु, नजरिया एवं शिक्षण विधियाँ—बातचीत आधारित एवं भागीदारीपूर्ण विधियाँ, सूत्रधार के रूप में शिक्षक। (3) इकाई के विषय एवं संरचना, अभ्यास कार्य की प्रकृति एवं उसका निहितार्थ। (4) अधिगम के अकादमिक मापदण्ड एवं संकेतक। (5) सामाजिक अध्ययन की पाठ्यचर्या के प्रभावी शिक्षण के लिये अधिगम संसाधन।

इकाई 6 : कक्षा शिक्षण की योजना एवं मूल्यांकन—(1) शिक्षण की तैयारी : सामाजिक अध्ययन शिक्षण की योजना, सत्र योजना, इकाई योजना और कालखण्ड योजना। (2) योजना का मूल्यांकन। (3) आकलन और मूल्यांकन—परिभाषा, आवश्यकता और महत्त्व। (4) सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE)—अधिगम के लिये आकलन, अधिगम का आकलन, रचनात्मक आकलन एवं उसके साधन, योगात्मक आकलन, भारांकन सारणी (वेटेज टेबल), फीडबैक एवं रिपोर्टिंग प्रक्रिया, अभिलेख एवं रजिस्टर।

पुस्तक का नाम— 'राधा' सामाजिक विज्ञान शिक्षण **मूल्य : 230.00**

ISBN : 9789386445933

अष्टदशम् प्रश्न पत्र : (च) Pedagogy of English (Upper Primary-Optional Paper)

Objectives–(1) Equip student-teachers with s theoretical perspective on English as 'Second Language' (ESL). (2) Enable student-teachers to grasp general principles in language learning and teaching. (3) To understand young learners and their learning context. (4) To grasp the principles and practice of unit and lesson planning for effective teaching of English. (5) To develop classroom management skills; procedures and techniques for teaching language. (6) To examine and develop resources and materials and there usage with young learners for language teaching and testing. (7) To example issue in language assessment and their impact on classroom teaching.

Unit 1 : Approaches and Methods to Teaching of English–(1) Active learning methods. (2) Cognitive and constructivist approach : nature and role of learners different kinds of learners. (3) Teaching mutligrade classess multilevel classess. (4) Socio-psychological factor (attitude, aptitude, motivation, level of aspiration). (5) From knowledge based approach to skill based approach.

Unit 2 : Pedagogical implications of SLA theories–(1) Second language acquisition theoris. (2) Interaction in second language in classroom, from theory to practice. (3) The pedagogy of reading. (4) Discourse oriented pedagogy.

Unit 3 : Process and Planning–(1) Characteristics of a good teaching plan. (2) Different processes of teaching proses, poetry, grammar. (3) Constructivist situations using formats like 5 E's (Engage, Explore, Explain, Elaborates, Evaluate) and SQ4Rs (Survey, Questions, read, recitem review, reflection).

Unit 4 : Curriculum and resource material–(1) NCF-05 chapter 3, 3.2.2 Curriculum, 3.3.1 The curriculum at different stages. (2) NCF-05 chapter 3, 3.1.1. Language education, 3.1.2. Home/first/language or mother tongue, 3.1.3. Second language exquisition. (3) NCF-05 chapter 2, 2.3 Curriculum studies, knowledge and curriculum. (4) Position paper on language.

Unit 5 : Classroom transaction process–(1) Role of 'talk' in the classroom to make the class more interaction. (2) Development of vocabulary through pictures, flow charts and language game. (3) Dealing with textual exercises (Vocabulary, grammar, study skills, project work).

Unit 6 : Assessment–(1) CCE-concept and procedure : implications of assessment–for the learner, for the teacher and for the community, maintaining teacher's diary, record, informal, feedback from the teachers, measuring progress, using portfolio for subjective assessment. (2) Assessing speaking and listening, reading and writing abilities through CCE. (3) Attitude towards errors and mistakes in second language learning.

पुस्तक का नाम— 'Radha' Pedagogy of English Language मूल्य : 220.00

ISBN : 9789386445902

अष्टदशम् प्रश्न पत्र (वैकल्पिक) : (स) गणित शिक्षण (कक्षा 6 से कक्षा 8 तक)

उद्देश्य—(1) गणितीय तरीकों से तर्क करने के लिये अन्तर्दृष्टि विकसित करना। (2) बीजगणितीय चिन्तन के प्रति सजगता एवं उसे सराहने की क्षमता विकसित करना। (3) ज्यामितीय अवधारणाओं की समझ विकसित करना। (4) छात्राध्यापकों को सूचनाओं के साथ कार्य करने के सांख्यिकीय तरीकों एवं सम्बन्धित गणितीय अवधारणाओं से परिचित कराना जो इस प्रक्रिया में मदद करते हैं। (5) भावी शिक्षकों में बच्चों को औपचारिक गणित सम्प्रेषित करने से सम्बन्धित प्रक्रियाओं पर अपनी प्रतिक्रिया देने की क्षमताओं में अभिवृद्धि करना। (6) भावी शिक्षकों को अपनी प्रतिक्रिया देने जैसे कार्यों से जोड़ना जिससे वे गणितीय चिन्तन के मूलभूत अंगों को समझने एवं उन्हें सम्प्रेषित करने के तरीकों में समर्थ हों।

इकाई 1 : गणितीय तर्क—सामान्यीकरण की प्रक्रियाएँ, पैटर्न पहचानना और परिकल्पना के निर्माण में सहायक आगमनात्मक तर्क (Inductive reasoning) प्रक्रिया। (1) गणित की संरचना : अभिगृहीत (Axioms), परिभाषाएँ, प्रमेय (Theorems)। (2) गणितीय कथनों (Statements) की वैधता जाँचने की प्रक्रिया, उत्पत्ति (Proof), प्रति-उदाहरण, अनुमान (Conjecture)। (3) गणित में समस्या समाधान—एक प्रक्रिया। (4) गणित में रचनात्मक चिन्तन।

इकाई 2 : बीजगणित चिन्तन—(1) अंक पैटर्न से निकलने वाले सामान्यीकरण को अज्ञात के इस्तेमाल द्वारा अभिव्यक्त करने को समझने में मदद करने वाला अंक पैटर्न। (2) क्रियात्मक सम्बन्ध (Functional relations)। (3) चरों (Variables) का प्रयोग—कब और क्यों। (4) सामान्य रेखीय समीकरणों को बनाना और हल करना। (5) बीजगणितीय चिन्तन पर आधारित गणितीय खोजबीन/पहेली।

इकाई 3 : व्यावहारिक अंकगणित और आँकड़ों का प्रबन्धन—(1) आँकड़ों को इकट्ठा करना, उनका वर्गीकरण और उनकी व्याख्या करना। (2) संग्रहीत आँकड़ों का प्रस्तुतीकरण। (3) प्रारम्भिक सांख्यिकीय तकनीक। (4) रेलवे समय सारणी सहित अन्य

समय सारणी बनाना। (5) प्रतिशत। (6) अनुपात और समानुपात। (7) ब्याज। (8) बट्टा/छूट (Discount)।

इकाई 4 : स्थान (Space) और आकारों को ज्यामितीय रूप से देखना—(1) ज्यामितीय चिन्तन के स्तर—वान हील्स (Van Hieles)। (2) सरल द्विविमीय और त्रिविमीय आकृतियाँ—ज्यामितीय शब्दावली। (3) समरूपता और समानता (Congru-ency and similarity)। (4) रूपान्तरण और ज्यामितीय आकृतियाँ। (5) मापन और ज्यामितीय आकृतियाँ। (6) ज्यामितीय उपकरणों का प्रयोग करते हुए ज्यामितीय आकृतियों की रचना।

इकाई 5 : गणित को सम्प्रेषित करना—(1) पाठ्यचर्या और कक्षागत प्रक्रियाएँ। (2) गणित के शिक्षण-अधिगम में पाठ्य पुस्तकों की भूमिका। (3) गणित प्रयोगशाला/संसाधन कक्ष। (4) छात्रों को उनके कार्यों में हुए गलतियों के बारे में फीडबैक देना। (5) गणित से डर और असफलता से पार पाना।

इकाई 6 : गणित के आकलन से सम्बन्धित मुद्दे—(1) मुक्त उत्तर वाले प्रश्न (Open ended questions) और समस्याएँ। (2) अवधारणात्मक समझ के लिये आकलन। (3) सम्प्रेषण और तर्क जैसे कौशलों के मूल्यांकन के लिये आकलन। (4) गणितीय विचार को समझाने के लिये उदारण एवं अन्य उदाहरणों का प्रयोग। (5) तर्क के परिप्रेक्ष्य में पुस्तक का आलोचनात्मक विश्लेषण। (6) गणितीय शब्दावली और उसके गणितीय अवबोध के विकास पर स्पष्टता।

इकाई 7 : सत्रीय कार्य—सत्रगत् कार्य (कोई एक)—(1) कम्पास यन्त्र (ज्यामिति बॉक्स) का निर्माण एवं ज्यामिति के शिक्षण में इसका प्रयोग। (2) गोला, शंकु, बेलन के मॉडल का निर्माण तथा इनका आयतन एवं क्षेत्रफल ज्ञान करना। (3) किसी एक कक्षा के विद्यार्थियों की आयु, ऊँचाई तथा भार सम्बन्धी आँकड़ों का संग्रह करना एवं उनका आलेख बनाना तथा मध्यमान ज्ञात करना। (4) गणित के पैटर्न। (5) कागज मोड़कर त्रिविमीय आकृतियों का निर्माण एवं उनका शिक्षण में उपयोग। (6) बीजीय सर्वसमिकाओं के ज्यामितीय प्रमाण हेतु मॉडल तैयार करना—(a) $(a+b)^2 = a^2+2ab+b^2$. (b) $(a-b)^2 = a^2-2ab+b^2$. (c) $a^2-b^2 = (a+b)(a-b)$. (7) π के सत्यापन हेतु मॉडल तैयार करना। (8) वृत्त के क्षेत्र के सत्यापन हेतु माडल का निर्माण एवं उसका शिक्षण में उपयोग। (9) अनियमित आकृति के क्षेत्रफल की गणना हेतु मॉडल निर्माण एवं उसका कक्षा शिक्षण में उपयोग। (10) संख्या रेखा पर परिमेय संख्याओं के प्रदर्शन हेतु मॉडल का निर्माण एवं उसका शिक्षण में उपयोग। (11) किसी बैंक में जाकर तीन जमा/ऋण योजनाओं का विवरण पताकर लाभकारी स्थिति का विश्लेषण करना। (12) ज्यामिति अवधारणाओं के सत्यापन हेतु मॉडल निर्माण एवं शिक्षण में उपयोग।

पुस्तक का नाम— 'राधा' गणित शिक्षण **मूल्य : 240.00**

ISBN : 9789386445957

अष्टदशम् प्रश्न पत्र (वैकल्पिक) : (द) विज्ञान शिक्षण

उद्देश्य—(1) छात्राध्यापकों में विज्ञान की अवधारणाओं की समझ विकसित करना। (2) छात्राध्यापकों को विज्ञान की प्रकृति के विभिन्न पहलुओं से परिचित कराना। (3) छात्राध्यापकों में वैज्ञानिक अवधारणाओं की समझ एवं उनके संज्ञानात्मक विकास करने योग्य बनाना। (5) छात्राध्यापकों में विज्ञान शिक्षण एवं आकलन हेतु रणनीति निर्माण करने की समझ विकसित करना।

इकाई 1 : विज्ञान की अवधारणाओं का पुनरावलोकन—कक्षा 1 से 6 तक विज्ञान

की पाठ्य पुस्तकों के आधार पर परिवेश में होने वाली निम्नलिखित घटनाओं का पुनरावलोकन एवं अन्य विषयों पर विज्ञान से सम्बन्ध स्थापित करना—(1) जंग क्यों लगती है? (2) बादल कैसे बनते हैं? (3) मोमबत्ती जलते समय छोटी क्यों हो जाती है? (4) वनस्पति और जन्तु अपना भोजन कैसे करते हैं? (5) वनस्पतियों में जन्तुओं में पुनरुत्पादन कैसे होता है? (6) पवन चक्की कैसे कार्य करती है। (7) बल्ब कैसे प्रकाश देता है?

इन सब प्रश्नों के लिये छात्राध्यापक उपलब्ध साहित्य का अध्ययन करेंगे, गतिविधि एवं प्रयोग करें तथा अवलोकन का अभिलेख (रिकॉर्ड) रखेंगे। छात्राध्यापक आपस में तथा शिक्षक अध्यापक के साथ चर्चा करेंगे, प्रश्नों का उत्तर कैसे प्राप्त करें, इस बात पर चिन्तन करेंगे, जाँच करने के लिये निश्चित विधि को ही क्यों चुना गया; इन अभ्यासों को करवाते समय शिक्षक-अध्यापक सुविधादाता का कार्य करेंगे।

इकाई 2 : विज्ञान क्या है जानना और बच्चों के वैज्ञानिक विचार समझना—(1) विज्ञान की प्रकृति—अवधारणा, प्रक्रिया एवं उत्पाद। (2) विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान में सम्बन्ध। (3) वैज्ञानिक विधि का ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग। (4) वैज्ञानिक एवं विज्ञान की अवधारणाओं के बारे में बच्चों के विचार। (5) विज्ञान की अवधारणाओं के बारे में बच्चों के विचारों का अवलोकन, विश्लेषण एवं दस्तावेजीकरण।

इकाई 3 : सभी के लिये विज्ञान—(1) विज्ञान की कक्षा में लिंग, भाषा, संस्कृति एवं समानता सम्बन्धी मुद्दे, सामाजिक एवं सामाजिक विकास में विज्ञान की भूमिका। (2) जन सामान्य तथा खेती के लिये पर्याप्त पानी की उपलब्धता पर विचार। (3) हरित क्रान्ति और टिकाऊ खेती की विधियाँ। (4) सूखा, अतिवृष्टि आदि प्राकृतिक आपदाओं का किसानों पर प्रभाव। (5) अनेक प्रजातियों के लुप्तप्राय होने के कारण। (6) स्थानीय स्तर पर समुदाय में होने वाली समस्याएँ एवं निराकरण। (7) साहित्य, सर्वे, चर्चा, पोस्टर द्वारा अभियान, लोक सुनवाई एवं किसानों से वार्ता तथा क्षेत्र एवं विशेषज्ञों से सम्बन्धित अन्य मुद्दे।

इकाई 4 : पाठ्य पुस्तक एवं शिक्षण विधियों का संज्ञान—(1) विज्ञान की पाठ्य पुस्तक के निर्माण के दार्शनिक, सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक आधार। (2) विषयवस्तु, उपागम और विज्ञान शिक्षण प्रविधियाँ, अन्तर्क्रियात्मक और सहभागी शिक्षण विधियाँ, सुविधादाता के रूप में शिक्षक। (3) प्रकरण, इकाई की संरचना, अभ्यास की प्रकृति और इनके निहितार्थ। (4) शैक्षिक मानदण्ड और अधिगम के सूचकांक। (5) विज्ञान पाठ्यचर्या में प्रभावकारी विनिमय हेतु अधिगम स्रोत।

इकाई 5 : कक्षा-कक्ष योजना और मूल्यांकन—(1) विज्ञान शिक्षण हेतु शिक्षण तत्परता, कक्षावार, इकाईवार, कालखण्डवार, वार्षिक योजना तैयार करना एवं उसका मूल्यांकन। (2) योजना का मूल्यांकन। (3) आकलन एवं मूल्यांकन : परिभाषा, आवश्यकता एवं महत्त्व। (4) सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE), अधिगम का आकलन, अधिगम के लिये आकलन, रचनात्मक आकलन और उपकरण, सारांशित मूल्यांकन, अधिभार सारणी, प्रतिपृष्ठपोषण, प्रतिवेदन प्रक्रिया, अभिलेखन और पंजीयन।

पुस्तक का नाम— 'राधा' विज्ञान शिक्षण **मूल्य : 220.00**

ISBN : 9789386445988